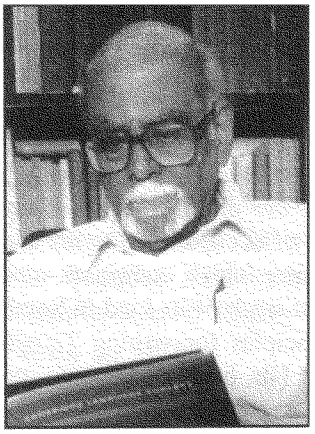

भद्रिराजू कृष्णमूर्ति
BHADRIRAJU KRISHNAMURTI

प्रो. भद्रिराजू कृष्णमूर्ति, जिन्हें आज साहित्य अकादेमी अपनी महत्तर सदस्यता से विभूषित कर रही है, एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त भाषाविद् और तेलुगु के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान हैं, जिनकी पच्चीस कृतियाँ और सौ से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं।

19 जून 1928 को आंध्र प्रदेश के गुंटूर ज़िले के एक तटवर्ती क़स्बे ओंगोल में जनमे भ. कृष्णमूर्ति ने 1948 में आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर से तेलुगु भाषा और साहित्य में बी.ए. (ऑनर्स) प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण किया। आपने पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. (1955) और पी-एच. डी. (1957) की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपको यूएसईएफआई की फुलब्राइट और स्मिथ मंट फ़ेलोशिप (1954-55) और रॉकफ़ेलर फ़ाउंडेशन फ़ेलोशिप (1955-56) से सम्मानित किया गया।

1949 में आपने आंध्र विश्वविद्यालय में तेलुगु भाषा और साहित्य के लेक्चरर के रूप में अध्यापन कार्य प्रारंभ किया और 1960 तक इसी पद पर बने रहे। 1960-61 के दौरान आप कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए। 1961-62 में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति में तेलुगु और द्रविड़ भाषा-विज्ञान विभाग में रीडर बने। तत्पश्चात् आपको भाषा-विज्ञान विभाग की स्थापना के लिए उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में प्रोफ़ेसर नियुक्त किया गया। 1962-79 तक आप वहाँ विभागाध्यक्ष रहे और कॉलेज ऑफ़ आर्टस एंड कॉमर्स के प्राचार्य, कला संकाय के डीन और सिंडिकेट सदस्य के रूप में कार्य किया। 1988 में आप वहाँ से सेवानिवृत्त हुए। उन्हीं के कार्यकाल में भाषा-विज्ञान विभाग को भाषा-विज्ञान उच्चतर केन्द्र के रूप में अपग्रेड किया गया। 1986-93 के दौरान आप हैदराबाद विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1993 से 96 तक आप वहाँ ऑनरेरी प्रोफ़ेसर रहे। 2003 से आप आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर में ऑनरेरी प्रोफ़ेसर हैं।

वह आपके जीवन का एक अविस्मरणीय क्षण रहा, जब 1962 में आपको ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के 'टैगोर चेयर' के प्रोफ़ेसर के रूप में आमंत्रित किया गया।

आप कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, कॉर्नेल विश्वविद्यालय, इथाका, हवाई विश्वविद्यालय, इलिनॉयस विश्वविद्यालय, अर्बाना, मिशिगन विश्वविद्यालय, ऐंन आर्बर, पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय, फिलाडेल्फिया, टेक्सास विश्वविद्यालय (अमेरिका) में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर रहे और मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट इन इवोल्यूशनरी एंथ्रोपोलाजी, लीपजिग (जर्मनी), आस्ट्रॉल नेशनल यूनिवर्सिटी (आस्ट्रेलिया) और टोकियो एवं कुमामोतो विश्वविद्यालय (जापान) में विजिटिंग साइंटिस्ट रहे। इन देशों की अनेक महत्त्वपूर्ण संस्थाओं ने आपको फ़ेलोशिप प्रदान कर सम्मानित किया।

Professor Bhadriraju Krishnamurti, on whom the Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today, is an internationally reputed linguist and one of the most eminent scholars in Telugu with twenty-five books and over one hundred research papers.

Born on June 19, 1928, in Ongole, a coastal town in Guntur District, Andhra Pradesh, Bh. Krishnamurti did his B.A.(Hons) in Telugu Language and Literature with First Class First from the Andhra Universitiy, Waltair, in 1948, and M.A., Ph.D., from University of Pennsylvania(1955, 1957). He was awarded Fulbright and Smith-Mundt Fellowship of USEFI(1954-55) and Rockefeller Foundation Fellowship(1955-56).

Beginning his teaching career as a Lecturer in Telugu Language and Literature in Andhra University, in 1949, which position he held till 1960, he went on to become Asst. Professor, University of California at Berkeley during 1960-61, and Reader in Telugu and Dravidian Linguistics in Sri Venkatesvara University, Tirupati, during 1961-62. He was then appointed Professor in Osmania University, Hyderabad, to establish the Department of Linguistics where he was Head during the period 1962-79, and served as Principal, College of Arts and Commerce, Dean, Faculty of Arts, and Syndicate Member, till his retirement in 1988. By that time, the Department of Linguistics was upgraded as Advanced Centre of Linguistics. He was the Vice-Chancellor, University of Hyderabad, during the period 1986-93. He held the position of Honorary Professor there from 1993 to '96, and from 2003, in Andhra University, Waltair.

He reached one of the memorable points of his career when he occupied the Tagore Centenary Chair as Professor of Linguistics at Oxford University in 1962.

He has been Visiting Professor in the University of California at Berkeley, Cornell University, Ithaca, Hawaii University, University of Illinois, Urbana, University of Michigan, Ann Arbor, University of Pennsylvania, Philadelphia, University of Texas (U.S.A.), Visiting Scientist, Max Planck Institute in Evolutionary Anthropology, Leipzig, Germany) Austral National University (Australia) and Universities of Tokyo and Kumamoto (Japan). He is also the

आपने अपने विद्वत्तापूर्ण योगदान से कई क्षेत्रों को समृद्ध किया है जिसमें विवरणात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं समाज भाषा विज्ञान, भाषा नियोजन और शिक्षण, साक्षरता, स्पीच पैथोलॉजी, कोशविज्ञान, अनुवाद, साहित्य आदि शामिल हैं। सबसे पहले आपने ही व्यावसायिक शब्दों के बोली कोशों को तैयार करने की प्रविधि विकसित की और इस शृंखला के पहले दो कोश प्रकाशित किए। अब तक ऐसे नौ कोश प्रकाशित हो चुके हैं। दक्षिण एशिया में यह अपनी तरह का पहला कार्य है। आपने ही क्लासिकल कृतियों की तेलुगु अनुक्रमणिका तैयार करने के सिद्धांत विकसित किए। द्रविड़ भाषा-विज्ञान पर आपकी पुस्तक एवं निबंधों ने आपको इस विषय पर विश्व के दो या तीन विद्वानों की श्रेणी में ला खड़ा किया।

आपने आंध्र प्रदेश में कई शिक्षण पाठ्यक्रमों और अपने तेलुगु लेखों के माध्यम से भाषा विज्ञान को एक अनुशासन के रूप में लोकप्रिय बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आपने कई क्षेत्रों में अग्रगामी कार्य किया—यथा, जनजातीय भाषाओं से संबंधित क्षेत्र कार्य, कुबी नामक जनजातीय भाषा के व्याकरण का प्रकाशन, तेलुगु व्याकरण बोली विज्ञान, कोश विज्ञान आदि से संबंधित कार्य। आपने तेलुगु भाषा के इतिहास *तेलुगु भाषा चरित्र* का संपादन किया, जिसके पाँच संस्मरण प्रकाशित हो चुके हैं, जो कि इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। जे पी एल ग्विन के साथ संयुक्त रूप से लिखित और ओ यू पी दिल्ली द्वारा 1985 में प्रकाशित *ग्रामर ऑफ़ मॉडर्न तेलुगु* का उपयोग विश्वभर में होता है। आपकी कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं : *तेलुगु वर्बल बेसेज : ए कंपरेटिव एंड डिसक्रप्टिव स्टडी* (बर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1961), *स्टडीज इन इंडियन लिंग्विस्टिक्स* (संपा.), *कोंडा आर कुबी : ए द्रविड़ियन लैंग्वेज* (हैदराबाद : आं. प्र. सरकार, 1969) *लैंग्वेज, एजूकेशन एंड सोसायटी,* (नई दिल्ली : सेज, 1998), *कंपरेटिव द्रविड़ियन लिंग्विस्टिक्स : करेंट परस्पेक्टिव्स* (इंग्लैंड : ऑक्सफोर्ड, 2001), *द द्रविड़ियन लैंग्वेजेज* (इंग्लैंड, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003), *गोल्ड नगेट्स : ऐन एंथोलॉजी ऑफ़ तेलुगु शार्ट स्टोरीज़ ऑफ़ द पोस्ट इंडिपेंडेंस पीरियड इन ट्रांसलेशन* (संपा. च. विजयश्री के साथ, नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी, 2003) आदि। संप्रति आप संत कवि तिक्कणा की रचनाओं *तिक्कणा रचनाशिल्पम* और तेलुगु अंग्रेज़ी शब्दकोश पर कार्य कर रहे हैं।

प्रो. कृष्णमूर्ति लिंग्विस्टिक सोसायटी ऑफ़ इंडिया, द्रविड़ियन लिंग्विस्टिक एसोसिएशन, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली आदि के सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भाषा-वैज्ञानिकों के पैनेल के संयोजक, कई संस्थाओं के शासी निकायों के सदस्य, यथा सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ़ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज, हैदराबाद, इंडियन एडवाइजरी कमेटी, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज, नई दिल्ली, सोसायटी ऑफ़ इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला, जेनरल कौंसिल, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ रूरल डेवलपमेंट, हैदराबाद, वर्किंग ग्रुप ऑफ़ लैंग्वेजेज, योजना आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। साहित्य अकादेमी की स्थापना के समय आप इसके कार्यकारी मंडल के सदस्य रहे और बाद में भी तीन बार सदस्य रहे।

प्रो. भ. कृष्णमूर्ति को इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसाइटी, नई दिल्ली के विजयश्री पुरस्कार, सद्गुरु श्री शिवानंद मूर्ति इमिनेंट सिटीजन एवार्ड से पुरस्कृत किया जा चुका है। आपको दक्षिण एशियाई भाषा-विज्ञान

recipient of a number of Fellowships from several distinguished bodies in these countries.

His scholarly contributions on a wide range of themes including descriptive, historical, comparative and socio-linguistics, language planning and teaching, literacy, speech pathology, lexicography, translation, literature etc., remain unrivalled. It is he who evolved the methodology for the preparation of dialect dictionaries of occupational terms and published the first two in the series, which comprises nine such volumes now. This is the first work of its kind in South Asia. He also developed the principles for writing Telugu concordances of classical works. His book and essays on Comparative Dravidian Linguistics puts him as one of the top two or three scholars on this subject in the world. Above all, his role in popularizing linguistics as a discipline in Andhra Pradesh through several teaching courses and his articles in Telugu, is worthy of special note.

Bh. Krishnamurti He did pioneering work in various fields—like the field work he did on several tribal languages, publishing eventually the grammar of a tribal language called Kubi, and his work on Telugu grammar, dialectology, lexicography etc. He has edited a volume on the history of the Telugu language, *Telugu Bhasha Charitra* which has gone into five reprints, speaking for its popularity. *A Grammar of Modern Telugu* which he co-authored with JPL Gwynn, and published by OUP, Delhi, 1985, is used all over the world. Some of his other important works are: *Telugu Verbal Bases: A Comparative and Descriptive Study* (Berkeley: University of California Press,1961), *Studies in Indian Linguistics* (Ed.), *Konda or Kubi: A Dravidian Language* (Hyderabad: Govt. of AP,1969), *Language, Education and Society* (New Delhi: Sage,1998) *Comparative Dravidian Linguistics: Current* Perspectives(UK: Oxford,2001), *The Dravidian Languages*,(UK: Cambridge University Press, 2003), *Gold Nuggets: An Anthology of Telugu Short Stories of the Post-Independence Period in Translaion* [(Ed., with Ch.Vijayasree,) New Delhi: Sahitya Akademi, 2003] etc. Presently, he is working on *Tikkana Rachanasilpam* on the writings of Tikkana, and on a Telugu-English Dictionary.

Bh. Krishnamurti is member of many Learned Bodies like the Linguistic Society of America, Dravidian Linguistic Association, Indian Council of Social Science Research, New Delhi. Convener, Panel of Linguists, University Grants Commission, Member of governing bodies like Board of Governors, Central Institute of English and Foreign Languages, Hyderabad, Indian Advisory Committee, American Institute of Indian Studies, New Delhi, Society of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, General Council, National Institute of Rural Development, Hyderabad, Working Group of Languages, Planning Commission, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India, etc. He was an Executive Board Member of the Sahitya Akademi when it was formed, and later on, for three terms.

Bh. Krishnamurti is recipient of Vijaya Shree Award from India International Friendship Society, New Delhi,

के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए साउथ एशियन लैंग्वेज एनल्सिस राउंडटेबल, 1991 में प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति द्वारा आपको मानद डी. लिट. की उपाधि प्रदान की गई है और हाल में ही आपको रॉयल सोसायटी ऑफ़ एडिनबर्ग का फ़ेलो चुना गया है।

प्रो. भ. कृष्णमूर्ति का नाम साहित्य और पांडित्य के क्षेत्र में अग्रणी है। आपके पुरोगामी कार्यों और अनूठे योगदान ने आपको भारतीय साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक आदरणीय बना दिया है। आपको अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता से विभूषित करते हुए अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

Sadguru Sri Sivananda Murthy Eminent Citizen Award and honoured with a citation at South Asian Language Analysis Roundtable 1991, for 'outstanding contribution to South Asian Linguistics,' Hon.D.Litt. from Sri Venkateshvara University, Tirupati etc. He was elected Fellow, Royal Society of Edinburgh, recently.

Bh.Krishnamurti's place in the world of letters is that of a doyen. His pioneering work and unique contributions make him one of the most respected names in Indian literature.

Sahitya Akademi is honoured by conferring its highest honour, the Fellowhsip, on this great scholar, Professor Bhadriraju Krishnamurti.